

ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 29

2016

**JOURNAL
OF THE
MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD**



EDITORS

S.D. Guru

Dr. R.K. Sharma

Dr. Suresh Mishra

32	गांधी जी की नारियों के प्रति अवधारणा डॉ. सुधा सोनी	134
33	सविनय अवज्ञा आन्दोलन में छत्तीसगढ़ अंचल के स्त्रियों की भूमिका — एक अध्ययन डॉ. सीमा पाण्डेय	138
34	गुप्त एवं गुप्तोत्तर कालीन सागर का इतिहास डॉ. बी.के. श्रीवास्तव	141
35	ग्वालियर का एक नायाब नक्षत्र : संगीत सम्राट तानसेन डॉ. मीना श्रीवास्तव	146
36	सातवीं सदी में उत्तर भारत के लघु राज्य डॉ. अनिल दुबे	150
37	दूल्हादेव उर्फ हरदौल अथवा शिव एक अध्ययन डॉ. वन्दना गुप्ता	155
38	बाजीराव (प्रथम) के राज्य की भौगोलिक स्थिति डॉ. विभा राठौड़	158
39	महान भूमकाल विद्रोह में गुण्डाधुर का योगदान डॉ. पंकज सिंह	162
40	Slaves and their Rights in Ancient India Dr. Sanjay Barolia	167
41	नक्सलवाद की उत्पत्ति और विकास : एक ऐतिहासिक स्मरण डॉ. सीमा झेरवार	171
42	गुर्जर प्रतिहार राजवंशों के चम्बल क्षेत्र के सामन्त डॉ. मधुबाला कुलश्रेष्ठ	175
43	मध्यप्रदेश के बौद्ध कला मण्डप — भरहुत एवं सांची डॉ. कुमकुम माथुर	182
44	बौद्ध-संस्कृत साहित्य में स्त्रियों की दशा (ललितविस्तार के संदर्भ में) डॉ. आर. पी. सिंह	188
45	हरीसिंह गौर पुरातात्विक संग्रहालय सागर की कलावेरा प्रतिमाएँ डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव	193

गुप्त एवं गुप्तोत्तर कालीन सागर का इतिहास

डॉ. बी.के.श्रीवास्तव
प्रोफेसर-इतिहास
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

गुप्तकालीन सागर का इतिहास एरण के विशेष संदर्भ में देखें तो सांस्कृतिक उन्नति का इतिहास था। भारत में 319 ई. से 550 ई. तक गुप्त काल रहा, जिसे कि कुछ विद्वानों ने भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल कहा है। समुद्र गुप्त (350-375 ई.) का काल गुप्त काल के उत्कर्ष का काल था। समुद्र गुप्त ने आर्यवर्त की विजय के समय नाग वंश को परास्त किया। अपने पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय का विवाह नागवंशी वीरसेन की पुत्री कुबेर नागा से संपन्न किया। अपनी दक्षिणापथ की विजय के दौरान समुद्रगुप्त सागर क्षेत्र से गुजरा।¹ संभवतः इसी दौरान वह एरण की भौगोलिक स्थिति एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रभावित हुआ होगा। एरण से समुद्र गुप्त का जो अभिलेख प्राप्त हुआ है, उसमें एरण को स्वभोग नगर कहा गया है। विद्वानों ने 'स्वभोग नगर' से तात्पर्य विश्राम स्थल से लगाया है। संभवतः समुद्र गुप्त सुख, आनन्द एवं मन की शांति के लिये एरण आता होगा।² एरण एवं विदिशा में प्राप्त रामगुप्त के सिक्कों से ही गुप्त सम्राट रामगुप्त की ऐतिहासिकता प्रमाणित हुई है। समुद्र गुप्त के पुत्र रामगुप्त का शासन एरण एवं विदिशा क्षेत्र में रहा होगा।

एरण के उत्खनन से लगभग 380 ई. की दो मृणमुद्रायें प्राप्त हुई हैं, जो ईश्वर मित्र एवं उसके पुत्र सिंह सेन की हैं। संभवतः ये शक शासक थे। रामगुप्त की दुर्बलता का लाभ उठाकर इसी शक शासक सिंह सेन ने उस पर आक्रमण कर उसे परास्त किया। साथ ही एक अत्यन्त अपमानजनक संधि करने हेतु बाध्य किया। इस संधि के अनुसार रामगुप्त को अपने राज्य के बचाव के एवज में अपनी पत्नी ध्रुवदेवी (ध्रुव स्वामिनी) को शक राज को भेंट देना था। रामगुप्त इसके लिये तैयार हो गया। ऐसी स्थिति में रामगुप्त का छोटा स्वाभिमानी भाई चन्द्रगुप्त स्वयं ध्रुवदेवी का स्त्रीवेश धारण कर शकराज के शिविर में गया और शकराज की हत्या कर दी। इस कारण चन्द्रगुप्त की लोकप्रियता बढ़ने लगी और रामगुप्त की निन्दा होने लगी। इस परिस्थिति का लाभ उठा कर चन्द्रगुप्त ने अपने बड़े भाई रामगुप्त का वध कर उसकी पत्नी ध्रुव देवी से विवाह कर लिया। इस प्रकार चन्द्रगुप्त सम्राट बना।³ संभवतः एरण में ही चन्द्रगुप्त द्वितीय का राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ होगा। इस दृष्टि से चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (375-415 ई.) को गुप्त वंश का प्रतापी राजा बनाने का श्रेय सागर क्षेत्र को ही जाता है।⁴

गुप्त सम्राट स्कंद गुप्त (455-467 ई.) के समय भारत पर हूण आक्रमण आरंभ हुये। स्कन्द गुप्त की मृत्यु के पश्चात हूण शासक तोरमाण एरण तक आ गया। इस समय एरण गुप्त शासक बुद्ध गुप्त (476-495 ई.) के अधीन था। बुद्ध गुप्त के समय के 484 ई. के एरण अभिलेख से पता चलता है कि बुद्ध गुप्त की ओर से सामन्त शासक सुरश्मिचन्द्र नर्मदा के मध्य शासन करता था। इसके अधीन एरण था जहाँ सुरश्मिचन्द्र के सामन्त मातृविष्णु व धान्यविष्णु